ISSN : 2393 - 9362

साहित्य सरस्वती

वर्ष-नौ,अंक-36 अक्टूबर-दिसम्बर 2022

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय,सागर (म.प्र.)

साहित्य सरस्वती

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष - नौ, अंक - 36, अक्टूबर-दिसम्बर 2022

प्रधान संपादक

डॉ. सुरेश आचार्य

संपादक

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

उप-संपादक

सरदार पृथ्वीपाल सिंह

प्रो. पुरुषोत्तम सोनी

व्यवस्था एवं परामर्श

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय सागर की त्रैमासिक पत्रिका

ISSN - 2393-9362
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा अनुमोदित जर्नल नं. 47704
Peer reviewed journal वर्ष - नौ, अंक - 36, अक्टूबर-दिसम्बर 2022

विषय विशेषज्ञ समिति

प्रो. सुरेश आचार्य, अवकाश प्राप्त, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डी. लिट्, अध्यापक, हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर

प्रो. रूपा गुप्ता, हिन्दी विभाग,
बर्दवान विश्वविद्यालय, कलकत्ता

डॉ. राजीव रंजन गिरी, हिन्दी विभाग,
राजधानी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट,
गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)
फोन : 07582-243759, मो. : 9406519191

- **लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।**
- **समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।**
- **सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।**
- **रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।**

आवरण
असरार अहमद सागर

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क, गली नं. 1E
शाहदरा, दिल्ली-110032

सम्पादकीय

अमृत महोत्सव : युद्ध समस्याओं का हल नहीं

आपके आशीर्वाद, शुभकामनाओं और सहयोग से साहित्य सरस्वती ने इकाई-यात्रा पूर्ण कर ली है। यह पत्रिका का छत्तीसवाँ अंक है। त्रैमासिक होने से यह सुव्यवस्थित और निरन्तर बनी रही, यह भी आपका आशीष है। नौ वर्ष पूरे कर अगले अंक के साथ साहित्य सरस्वती दसवें वर्ष में प्रवेश करेगी। हम इस अवसर पर आपकी कृपा और निरन्तर स्नेह के आकांक्षी हैं और कृतज्ञ भी हैं। पिछले कुछ वर्ष परेशानियों के वर्ष रहे। कोरोना की विभीषिका तो थी ही। रूस और यूक्रेन के बीच साल-डेढ़ साल से चल रहा युद्ध भी एक बड़ी चिन्ता का हेतु है। दोनों पक्षों का नेतृत्व एक-दूसरे को परमाणु युद्ध की धमकियाँ दे रहा है। साथ ही चीन-ताईवान का विवाद भी तीव्र होता जा रहा है। यह सन्तोषजनक है कि भारतीय नेतृत्व ने अन्तरराष्ट्रीय मंचों से स्पष्ट कर दिया है कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। हमारे आस-पास छोटे-छोटे देश हैं। भारतभूमि से टूटकर बने इन देशों का अपना कोई इतिहास नहीं है। इसलिए इतिहास बनाने की चेष्टा में ये हास्यास्पद हरकतें भी करते हैं जो अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इन्हें विदूषक बना देती हैं। पाकिस्तान के एक मंत्री ने कहा था कि हमारे पास पाव-पाव भर के एटम बम भी हैं। सच है, मूर्खता वह अनन्त सागर है जिसकी थाह लेना सम्भव नहीं है। अच्छे-अच्छे गोताखोर अपना-सा मुँह लेकर लौट आते हैं।

शायद इसीलिए कहा गया था 'डेमोक्रेसी, इज द गवर्नमेंट ऑफ फूल्स, बाई द फूल्स एंड फार द फूल्स' यह यार लोगों की जादूगरी, कारनामों और करतबों के परिणामों से उत्पन्न क्षोभ रहा होगा। इस नकारात्मक अवधारणा को निरस्त करते हुए विश्व का महानतम और विशाल लोकतंत्र भारत अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, यह गर्व, गौरव और आत्मसन्तोष का विषय है। डायरेक्ट-एक्शन का नारा देकर भारत का बँटवारा कराने वालों का राजनैतिक इतिहास में निरन्तर धूमिल होता नाम और इतिहास विहीन पाकिस्तान की दुर्गति इस बात का प्रमाण है कि भारतीय प्रधानमंत्री की दुनिया को दी गई सलाह कि युद्ध किसी समस्या का हल नहीं है। अत्यन्त हृदयग्राही और सर्व-स्वीकार्य तथ्य है।

भारतीय लोकतंत्र के अमृत महोत्सव पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों यथा विज्ञान, कृषि, संस्कृति, साहित्य और समाज-चिन्तन ने अपने-अपने कार्य, अपनी-अपनी उपलब्धियों और अपनी सफलता के द्वारा भागीदारी प्रस्तुत की है। शिलांग, मेघालय के डॉ. श्यामबाबू शर्मा ने अपनी सम्पादित पुस्तक 'स्वाधीनता आन्दोलन और साहित्य' के माध्यम से राष्ट्रीय पटल पर अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराई है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनैतिक आन्दोलन नहीं था। वह एक बर्बर बहरी और स्वेच्छाचारी व्यवस्था के विरुद्ध जनभावना का सन्देश भी था। साहित्य से लेकर अर्थ और संस्कृति से लेकर धर्म, के क्षेत्रों में होने वाला अनर्थ उसके निशाने पर था।

भारत बहुजातीय, बहुसाँस्कृतिक और बहुभाषीय देश है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन एक ऐसा महायज्ञ था जिसमें सारे देश ने खुली भागीदारी की। सारी भाषाओं में स्वाधीनता आन्दोलन के लिए समर्पण और संघर्ष के तेवर नजर आते हैं। इस दृष्टि से डॉ. श्यामबाबू शर्मा ने यह बड़ा महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कार्य किया है। दूर शिलांग में बैठकर उन्होंने अधिकांश भारतीय भाषाओं के रचनाकारों की कृतियों को समेटकर एक ज्वलन्त-मशाल की तरह प्रकाशित किया है। भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में संस्कृत की भूमिका, स्वाधीनता आन्दोलन और भारतीय पत्रकारिता, आजादी और आदिवासी, क्रान्तिकारियों ने कलम से भी लड़ी आजादी की लड़ाई, स्वतंत्रता : अवधारणा और वैचारिकी, जनगण तेरी जय हो, भारतीयता का दर्शन, बोल छन्दों में हिन्दुस्तान, गाँधी चेतना का लोक विस्तार, स्वतंत्रता आन्दोलन में पंजाबी की अभिव्यक्ति, स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है... स्वराज्य और मराठी साहित्य, राष्ट्रीयता के प्रखर स्वर, राष्ट्रीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में सिन्धी साहित्य, बीसवीं सदी का पूर्वार्द्ध और अवधी कविता, गुजराती साहित्य में स्वाधीनता की अनुगूँज, कश्मीरियत और आजादी का उत्सर्ग, वन्देमातरम्...वन्देमातरम् (बाँग्ला कलम की भूमिका) स्वतंत्रता आन्दोलन और असमिया साहित्य, पूर्वोत्तर के हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय तत्व : विशेष सन्दर्भ मणिपुरी साहित्य, स्वतंत्रता के महायज्ञ में उड़िया साहित्य, सन्ताली लोक-साहित्य में स्वाधीनता का राग, स्वतंत्रता संग्राम तथा कन्नड़ साहित्य, स्वतंत्रता आन्दोलन में गूँजते विविध भाषी कंठ हैं। हिन्दी साहित्य की तो लगभग सारी विधाओं में ये स्वर सुनाई देंगे। ये लेख, संस्कृति और समाज को रास्ता दिखानेवाले गरिमामय लेख हैं। इनका शीर्षकों सहित इसलिए उल्लेख है कि इनमें भारतीयता की बहुरंगी, बहुभाषी छवियाँ मुग्ध करती हैं। साथ ही ये निबन्ध हमें भारतीय एकता और उत्सर्ग के प्रति आश्वस्त भी करते हैं।

डॉ. श्यामबाबू शर्मा ने लगभग सारी भारतीय भाषाओं के लेखकों के द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव को भारतीय पुष्पवन की अमूल्य निधि भेंट की है। साहित्य सरस्वती एतदर्थ उन्हें धन्यवाद देती है। उनकी प्रशंसा करती है। अपने पाठकों से इस पुस्तक को पढ़ने का अनुरोध करती है। यह अनुज्ञा बुक्स दिल्ली से प्रकाशित है।

भारत की राष्ट्रीय चेतना और क्रान्तिकारी भावनाओं के प्रचार-प्रसार में साहित्य की सोद्देश्य भूमिका रही है। इस चिन्ता के साथ कि हमारी नई पीढ़ियों को इस देश के अतीत, बहुजातीयता, बहुभाषकी, बहुक्षेत्रीयता बहुल सामाजिकता और विश्वबन्धुत्व की सही जानकारी मिलना दुष्कर हो रहा है। मैं अनुभव करता हूँ कि ऐसी और पुस्तकें लिखीं/सम्पादित किया जाना देश हित में है। भारतीय भाषा परम्परा ने हमारे साहित्य, संस्कृति, समाज, राजनीति, सभ्यता और मूल्यवत्ता को सदा एक गरिमा प्रदान की है। शक्तिशाली बनाया है। उपरोक्त चर्चित पुस्तक में यह परम्परा दिखाई देती है। विद्वानों के वैचारिक अवदान के साथ-साथ यह हमें अनेक नई जानकारियाँ भी देती है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा जापान पर किए गए आणविक हमले की त्रासदी हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए। हिरोशिमा और नागासाकी के क्रूर कब्रिस्तान आज भी मनुष्य की निर्ममता पर अट्टहास कर रहे हैं। इस हमले के साथ ही जापान ने आत्म-समर्पण कर दिया था। शायद वह पाँच